Item Code: 645 Participant Code: 3

विषय : "प्रकृति पर मानव का हस्तक्षेप"

अगर हम प्रकृति के बारे में कहें तो हमे कहने केलिए बहुत कुछ होगा। क्योंकि प्रकृति हमें सबकुछ देती है। प्रकृति पर होने वाली बहुत सारे तत्वों के सहारे से ही हम जीते हैं। प्रकृति से ही मानव बना है, वे आदिम काल में सिर्फ प्रकृति को ही आश्रय करता था। यह इसलिए कि प्रकृति ही उस समय मानव केलिए था। इंसान प्रकृति से ही सबकुछ सीखा। और प्रकृति उन्हे सबकुछ सिखाई।

अब कालचक्र अपने कर्तव्य करते रहे तो प्रकृति भी अपनी कर्तव्य करती रही और इंसान अपने समाज्य को बढाता रहा। अगर एक कलाकार एक सुन्दर चित्र रच रहे हो और उसमें

दूसरा आदमी हाथ चलाए तो तो चित्र ज़रूर खराब बनेगा। अब प्रकृति की हाल भी यही है। मानव प्रकृति को अपनी कलिय करने से रोक रहा है। प्रकृति भी कुछ भी करने की कोशिश करते हैं, मानव तह सब को खराब करती है। धरती प्रकृति के बिना कुछ भी नहीं है। अगर मानव ऐसे करती रही तो धरती का भी अंत होगा। मानव तिविध तरह से प्रकृति को चूषित कर रहे हैं।

मानव के कारण प्रकृति बहुत प्रतिसन्धीयों का सामना कर रहे है। मानव तिविध तरह से प्रकृति पर अपने हाथ चढाते हैं। समुद्रों और नदियों से रेत लेना भी इनमें से एक है। रेत को लेने से नदियों का गहराई बढती जाएगी

और बहुत सारे जानवरों को और जीवों को भी यह हानी पहुंच सकती है। क्या होगा जब बहुत सारे पेड़ों को हम काटे तो? अगर हम पेड़ों को काटें तो ~~वह~~ ओक्सीजन, ओज़ोन जैसे तत्व खतम हो जाएगा और यह इंसान को नहीं बल्कि पूरी धरती को खतम कर देगी। पेड़ों को धरती की फेफड़े कहा जाता है। और अगर फेफड़े नहीं तो धरती भी खतम। पेड़ों की बढ़ना, नदी की बहना, वायू की ताकत सब प्रकृति की अनुसार ही होती है।

प्रकृति को हाथ ईश्वर के हाथ का तुल्य है। और मानव ईश्वर है क्या प्रकृति पर अपना हस्तक्षेप करे?, मानव को मानव की तरह जीना चाहिए। मानव अपने आवश्यों को पूरा करने केलिए कुछ भी करने को

तैयार होना है। प्रकृति मानव को बुद्धी और सिद्धी इसलिय दी ताकी वह दूसरे सहजीवियों का मदद कर सके और उनके साथ मिलना से जीय। पर मनुष्य के बुद्धी अब अतिबुद्धी होकर दूसरे जानवरों पर ही भारी पड गया है। मनुष्य जंगलों में जाकर हाथियों को मारते है। वह शेर को मारता है। मनुष्य धरती पर अपने मैदानीबहादूरी के बल पर दूसरे सह जीवियों से काम करवाते है। प्रकृति की सबसे बडे शत्रू ; पानी पलास्टिक को फैलाना ही सबसे बडा खतरा है। पलास्टिक मिट्टी में मिल जाने में हजारो लाख साल लगते है। अगर यह पलास्टिक दूसरे जानवर खाय तो वो भी मर जा सकता है। नदियो पर पलास्टिक को डालने से वह पानी खराब हो जायगा। ओक्सिजन न मिलने के कारण मछलियाँ मर जायगा।

'खलील जिब्रान' एक ऐसी कवि है जो हमेशा प्रकृति के बारे में ही कविता लिखती है। "पेड़ एक वरदान है" नामक वाक्य भी हम इस हालत में कह सकता हैं। फाक्टरियों से निकालने वाला धूँवा भी प्रकृति को और ओज़ोण को खराबी पहुचा सकता है। ओज़ोन से ही हमें बहुत सारे संरक्षण मिलती है। ओज़ोण अल्ट्रा वॉइलट रेयस से हमें बचाती हैं। और अगर ओज़ोन नहीं तो यू.वी रेयस जैसे तत्व धरती पर आएगी और इससे सबको बहुत हानी भी होगी। 'एटमंट हिलारी' नामक महान ने धरती की सबसे बड़े पर्वत 'मौऊन्ट एवेरस्ट' पर हटा था। और अब बात ऐसी हो चुकी है कि पर्वत गाड़ियों पर चलकर जा रहे हैं। यह सारे स्थितियों में प्रकृति कि नाश ही हो रहा है।

मनुष्य की हाथों को कोई रोक नहीं सकती। वह हमेशा नई चीज़ों को खोजती रहती है। मानव की मोह को पूरा करने केलिए वह कुछ भी करेगा। एक छोटे से 'टाइमिंट' के टुकटे केलिए मानव हज़ारों पर्वतों को तोडते है।
इंसान को दूसरे पर्वत को बनाने की ताकथ नहीं है। वह जानता है कि अगर इस पर्वत यहाँ से चला गया तो वह उसे कभी नहीं वापिस ला ~~सक~~ सकता फिर भी वह प्रकृति को नाश करने की कोशिश करता है। वायू के द्वारा, आवाज़ के दुवारा, असंस्कृत वस्तुवों के दुवारा मनुष्य प्रकृति को नाश करती है।

मनुष्य को प्रकृति के बारे में याद दिलाने केलिए ही हर साल जूण पाँच को लोक परयावरण

दिवस से हम मनाते हैं। मनुष्य को हाथें प्रकृति पर नहीं लगना चाहिए। अगर ऐसा किया तो उसका प्रतिविधि भी जानकर ऐसा करना चाहिए। प्रकृति मानव के अधिकार सुनकर नहीं बल्की मानव प्रकृति की बातें सुनकर जीना चाहिए। जो हमें जान देता है उसे ही हमारा जान वापस लेने का अधिकार है और वह प्रकृति को ही है। अगर प्रकृति पर मानव का हस्तक्षेप बढ़ता गया तो प्रकृति ही उनकेलिए हमें जवाब देगा। मनुष्य पेड़ों को काटते हैं, नदियों को मलिन करते हैं और आदी वह प्रकृति को खतम करते रहते हैं।

प्रकृति अपने क्षमा को हमेशा काबू में रखता है। पर कुछ वक्त में प्रकृति अपने क्षमा को काबू में नहीं रख

पाते। उस वक्त में प्रकृति अपनी उग्र रुप दिखाती है। वह एक प्रलय के रुप में होगा, भूचलन से भी होगा या सुनामी है से होगा। पर हम तय नहीं कर सकते की वह किस तरह का होगा, पर हम यह तय कर सकता है कि नाश जरूर होगा। 'कुमारनाशान' अप उनके एक पहले कृति में यह कहता है कि "एक आदमी यह तय करके जीयेगा कि वह सबसे आगे है और वह बहुत उच्चे पर है। पर वह यह नहीं जान पाती है कि वह एक दिन ज़रूर गिरेगा"। यहा कति एक 'फूल' को पात्र बनाकर कविता रचीत हैं सचमें यह 'फूल' अब गिरने वाले मानव है। मानव के स्थिती बहुत बुरा होगा अगर वह प्रकृति से

खेलेगा। प्रकृति ही सबके ऊचे है और उसे खतम न करना चाहिए।

प्रकृति जीवन दायक है। और प्रकृति में ही सारा जीव जीता है। इस जीवन दायक प्रकृति की संरक्षन हमारा कर्तव्य है। और हम हमारे ये कर्तव्य से पीछे नहीं भाग सकते। जब तक काल चक्र घूमती रहेगी प्रकृति अपनी कर्तव्य करती रहेगी और हम मानव जाती प्रकृति पर 'न हस्तक्षेप' करके अपनी कर्तव्य करना चाहिए

और जीवन में एक अच्छा इंसान बनने का कोशिश करना चाहिए।